International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Vol. 6 Issue 7, July-2017, Impact Factor: 3.578

गुप्त काल में स्त्रियों का शैक्षिक विकास

कृष्ण पंवार

(M.A. History, UGC NET)

प्रस्तावना

वह सभ्यता जो अपने जीवन के प्रत्येक पहलू को उत्कृष्टता के शिखर पर ले जाने में सक्षम मानी जाती है तो वह सभ्यता स्वर्ण कालीन जीवन जी रही होती है भारतीय इतिहास में गुप्त काल को स्वर्ण युग माना जाता है। क्योंकि तत्कालीन समय में साहित्य, मूर्तिकला, शिक्षा, साहित्य, दर्शन, स्थापत्य और चित्राकला आदर्श जीवन शैली का सर्वेत्तम चित्रण प्रस्तुत करते थे। गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था में स्त्री भारतीयों की दशा का स्वरूपः– गुप्तकालीन समाज में बौद्ध विवरणों के अनुसार प्रशंसात्मक स्थितियाँ विद्यमान थी लेकिन बौध चीनी यात्राी हेवनसांग जिसने 405 से 411 ई. तक भारत यात्राा की और उसने अपने विवरणों में स्त्रियों की सामाजिक दशा को अन्य वर्णों से भिन्न दर्जे का दर्शाती है। इसी के साथ समाज में स्त्रियों के अधिकार भी एक सीमित पैमाने में थे इसी के साथ समाज को स्त्रियों को कुछ अधिकार प्राप्त थे लेकिन बस इतने ही अधिकारों पर संतोष कर लेना पर्याप्त नहीं होगा।

महिलाओं का शैक्षिक दृष्टिकोणः–

ऊंची जातियों की स्त्रायों को थोड़ी बहुत शिक्षा दी जाती थी, लेकिन उनका उद्देश्य उन्हें परिचर्चाओं में शरीक होने के लिये प्रोत्साहित या पेशेवर विशेषज्ञता प्रदान करना नहीं होता था। रोमिला थापरद्ध के कथन अनुसार स्त्रियों की शैक्षिक स्थितियों व व्यवस्था के लिए विश्वविद्यालयों की पहुँच उनसे कोसों दूर थी, जहाँ कुमारगुप्त ने नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना की व विभिन्न बौद्ध भिक्षु उनसे प्रभावित होकर अध्ययन हेतु भारत की ओर प्रस्थान करते थे जहाँ नालन्दा को गुप्त काल में ही ''ऑक्सपफोर्ड ऑपफ महायान बौद्ध की उपाधि से विभूषित किया गया था, वहीं गुप्तकालीन स्त्रियाँ अध्ययन केन्द्रों से शिक्षा हेतु वंचित थी। संपत्ति पर भी इस समय स्त्रियों का एक हद तक ही अधिकार था और उसमें भी जाति प्रथा और क्षेत्र के अनुसार फर्क किया जाता था। कुछ स्त्रियाँ जो थोड़ी बहुत स्वतन्त्रता प्राप्त किये होती थी उनहें भिक्षुणी या गणिका का प्रशिक्षण प्राप्त करने की आजादी मिली हुयी थी।

अनेक साहित्यिक स्रोतों में स्त्रियों के सामाजिक स्तर में गिरावट और शैक्षिक दृष्टिकोण से उत्कृष्टता को भी दिखाया गया है। विभिन्न उल्लेखों में स्त्रियों को परिवार की मूल इकाई के रूप में दर्शाया गया है। पत्नी और प्रेमिका के रूप में उनका महत्व दिखाया गया है। हालांकि स्त्रियों की स्वतन्त्रता समाप्त हो गयी थी। उनकी स्थिति में गिरावट का प्रमुख कारण स्त्रियों के जन्म की अपेक्षा पुरुष के आवागमन को उत्सव के रूप में मनाया जाता था। इस काल में वैदिक काल की अपेक्षा जहाँ स्त्रायों का उपनयन संस्कार किया जाता था वहाँ गुप्त काल में इसका पूर्णतया निषेध कर दिया गया था। स्वर्णकाल में स्त्रियों की भ्रामक स्थिति से इस काल में उनकी स्थिति की ऐसी विशेषतायें उभरी जो बाद के काल में उनकी सिीति का अंग बन गयी। औपचारिक रूप से शिक्षा का अधिकार स्त्रायों के पक्ष में न था।

सामाजिक मान्यतायेंः–

पत्नी के बिना जीवन शून्य माना जाता था। इस काल में स्त्रायों की गरिमा, मर्यादा और उनके महत्व को लेकर कुछ ऐसी बातें उजागर हुई जो बाद की विभिन्न शताब्दियों की विशेषता बन गयी। अल्पायु में विवाह, पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा का प्रचलन आरम्भ हो चुका था। इसमें पत्नी को प्रिय सखी 'प्रिय शिष्या' सचिव तथा सहधर्मिणी मानी जाती थी। भार्या ;पत्नीद्ध को समस्त रोगों का निदान माना गया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक उन्हें पुरुष की संरक्षकता स्वीकार करनी होती थी। बाणभट्ट के अनुसार कन्या किसी अनागत वर से नेय और उसकी ध्रोहर है। पिता के लिये कन्या विशेष समस्या थी धर्मिक, आर्थिक और सामाजिक वैयक्तिक सभी आधरों व परिस्थितियों में स्त्रायों को बंध्न में बांध गया। विभिन्न प्रतिबंधें को अब उसकी सुरक्षा का नाम दिया गया।

स्त्रियों से सम्बन्धित विभिन्न प्रचलित प्रथाएँः–

गुप्तकाल में केवल स्त्रायों को उत्पादक प्रणाली का अंग माना गया, अल्पायु में विवाह की प्रथा के कारण स्त्रायों की शिक्षा पर इससे विपरीत प्रभाव पड़ा। समाज के संगठन में मुख्य भूमिका पुरुषों की थी स्त्रायों को ऐसा ध्न माना गया जो परिस्थितियों में किसी को

दिया जा सकता था या गिरवी रखने के काम आ सकता था उनकी यह अधिनता आगे आने वाले समय मेंपुरजोर तरीके से बल लेती गई। पुरुष प्रधन समाज गुप्तकाल में पितृसत्तातमक प्रणाली में यह आवश्यक था कि स्त्राी पुरुष के अधिन रखी जायेगी।

साहित्यिक पक्षः–

गुप्कालीन साहित्य में निपुण स्त्रियों की भी बात कही गई। राजेश्वर के अनुसार कुछ स्त्रियाँ अच्छी कवियत्राी भी थी। अभिज्ञानशंकुतलम में अनुसूया को इतिहास की मुख्य ज्ञाता व विदुषी कहा गया है। संस्कृत के प्रसि(विद्वान अमरसिंह की रचना अमरकोश में कहा गया है कि स्त्राी शिक्षिकाओं को गुप्तकाल में 'उपाध्यायी', और 'आचार्या' शब्दों से विभूषित किया गया था। अल्पायु में विवाह के कारण समुचित रूप से विध का अवसर कन्याओं से पूर्णतया छीन लिया जाता था। शिक्षा की कमी के कारण ही स्त्रियों की सामाजिक प्रतिष्ठा में ह्रास होता गया। इसलिये हमें अनेक कालों तक किसी भी स्त्राी के दरबारी कवि या लेखक होने का साक्ष्य नहीं मिलता है। सामाजिक ह्रास में उनके पतन के कारण उनका बौ(िक विकास वह आधर नहीं ले पाया जिसके बारे में वे अपनी स्थिति को भांप सके। परदा प्रथा का प्रचलन के लिये हमें हर्षचरित में राजश्री को मुख पर रेशम का परदा डाले हुए बताया गया है। जिससे पर्दा विकास को अध्कि बल नहीं मिलता।

स्त्रियों का पुरातात्विक पक्षः–

गुप्तकालीन मन्दिरों जैसे कि नचना कुठार ;मध्यप्रदेशद्ध का पार्वती मन्दिर में भी पार्वती को परदे में नहीं दिखाया गया है। उदयगिरी के विष्णु मन्दिर में भी लक्ष्मी जी परदे से रहित हैं। महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में अजन्ता–एलोरा गुपफाओं के चित्राों में स्त्रीायों को भी परदे में नहीं दिखाया गया है। नाट्यशालाओं व रंगशालाओं में नृत्य करती स्त्रियाँ व राजकुमारी को भी परदे से बाहर दिखाया गया है। पफाहियान ने भी अपनी कृतियों में परदे का उल्लेख नहीं किया है। याज्ञवल्कय स्मृति में लिखी गई मान्यताएँ महत्वपूर्ण है। उन्होंने पत्नी को ही पति की सम्पत्ति का प्रमुख अध्किारी बताया है। पुत्रा ना होने की स्थिति में पुरुष की सम्पत्ति पर सर्वप्रथम पत्नी का ही अध्किार होता था और उसके बाद उसकी कन्याओं का, वेदों में वृहस्पति और नारद ने कहा है कि कन्या भी पुत्रा के समान संतान है। पुत्रा के ना होने पर सम्पत्ति पर कन्या का अध्किार होना चाहिये। जबकि कुछ ऐसे भी शास्त्राार्थ धरण किए हुए कुछ विद्वानों की विध्वा को पति की सम्पत्ति की अध्किारी नहीं माना है। उनके अनुसार संतानहीन व्यक्ति की सम्पत्ति राष्ट्र ;राज्यद्ध को प्राप्त होनी चाहिये। विध्वा की पालन पोषण की जिम्मेदारी का भार राजा का कर्तव्य है। यही हिन्दू ध्र्म का नियम है।

स्त्रियों के संदर्भों और दृष्टिकोणों में किसी भी काल का रूख उदार नहीं था। कहीं ज्यादा रूढ़िवादिता थी तो कहीं कम थी। राज्य के उच्चतर प्रशासनिक कार्यों में कहीं स्त्रियों के प्रतिनिध्ि व्यापारिक सलाहकार के रूप में कार्य करने का प्रमाण नहीं मिलता। स्त्रियों की स्थिति राजपरिवारों में भी राजा को सलाह देने वाली महिषी उनकी पत्नी के रूप में ही होती थी। वात्स्यायन के कामसूत्रा में भी पुरुषों की विलासिता और मनोरंजन हेतु सुविध के लिये गणिकाएं उनके जीवन का अंग थी। कामसूत्रा से पता चलता है कि कुछ गणिकाओं को जन्म से ही इस कार्य हेतु प्रशिक्षण स्वरूप उतारा जाता था। यह गुप्तकाल के आम नागरिक जीवन का भी सामान्य अंग थी। राजपरिवारों में भी गणिकाओं की मांग थी। मदिरालयों, नृत्य स्थलों, नाट्यमंडलियों आदि में स्त्रियों का एक अपना अलग योगदान था। एक ओर जहाँ विध्वा से सादगी से रहने की अपेक्षा की जाती थी लेकिन क्षत्रिाय जाति की स्त्राी को सती होने की आशा की जाती थी।

गुप्तकाल में सती होने का प्रथम साक्ष्य मिलता है। और यहीं से स्त्रियों के निरन्तर सती होने की घटनाओं में निरन्तर वृ(होती गई। विध्वा पुनर्विवाह कर सकती थी या नहीं इस पर उस समाज में लम्बे समय तक बहस चलती रही। क्योंकि क्षत्रियों की गुप्तकाल में एक नव क्षत्रिाय संस्कृति का उदय हो रहा था, जिसके अपने नियम थे और यहीं से स्त्रियों को सती होने के लिये प्रोत्साहित किया जाने लगा। सांसारिक व्यवस्थाओं से विमुख स्त्रियों के भिक्षुणी होने के संकेत मिलते हैं। जो बौ स्तूपों में बौ भिक्षुओं के साथ जीवन व्यतीत करती थी, वहीं दूसरी और देवदासियों का भी एक समूह या वर्ग था जो विभिन्न उत्सवों पर मंदिरों के भजन गायन व देवताओं की स्तुति आदि में अपना योगदान देती थी। ''कालिदास के मेघदूत में उज्जियनी के महाकाल मन्दिर में विभिन्न देवदासियों के नृत्यगान का उल्लेख किया है।

निष्कर्षः–

गुप्तकाल में स्त्रियों का शैक्षिक परिदृश्य निम्नतर था, आजीवन पराधिनता के पक्ष में गुपतकालीन विद्वानों ने जोरदार दलील दी थी कि स्त्रियों की आध्किारिक पराधिनता की मांग करने वाला सामाजिक दर्शन निजी संपत्ति में विकसित धरणाओं पर आधरित पितृसत्तातमक वर्ग था व वर्ग–विभाजित समाज में स्त्रियों की पराधिन सामाजिक दशा समाज में एक स्वाभाविक परिघटना थी। क्योंकि गुप्तकालीन समाज में एक नये मध्यम वर्ग उदय हो चुका था।

सन्दर्भ सूची

1. रोमिला थापर, पूर्वकालीन भारत (दिल्ली, 2008)

2. smith, B.L. (ed.) Essays on Gupta Culture (Delhi, 1983)
3. Suryavansi, B., The Atohiras : Their history and Culture (Baroda, 1962)
4. Attekar, A.S., The position of women in hindu civilization (Varanasi, 1956)
5. Majumadar, R.C. and attacker, A.S. (eds), the Vakataka gupta age. (Renaras, 1954)
6. Goyal, S.R. History of the imperial Guptas (Allahabad, 1967)
7. Gupta, P.L. The imperial Guptas, 2 Vols (Varanasi, 1974-1979)
8. Maity, S.K. , Economic life of Northern India in the Gupta period A.D. 300-500 (Calcutta, 1958)